Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 1159–1163

STUDY OF THE IMPACT OF FAMILY ENVIRONMENT OF HIGH SCHOOL LEVEL STUDENTS ON THEIR EDUCATIONAL ADJUSTMENT ABILITY

हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके शैक्षिक समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन

Beena Shukla [1], Sangeeta Shroff [2]

[1] Research Scholar, India
[2] Professor, MATS School of Education, MATS University, Raipur, Chhattisgarh, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.2267

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Education is a great necessity for the all-round development of a human being. Without education, complete development of any person is not possible. Education is the most important part of human life. Education is the ladder on which a person can raise his economic, social etc. levels. Education is the basis of the power of society. The computer era had started in the whole of India, which gradually started showing its effect in all sections, due to which computer knowledge became as important and mandatory as education for all sections. The most important resource for a nation or society is human being. Any nation can move forward towards progress only at that time. Whereas every human being should have the facility to develop himself freely to the extent he is capable of doing so. In fact, teaching occupies an important place in the history of human development.

Hindi: मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक महती आवश्यकता है। शिक्षा के बिना किसी भी व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास नहीं हो सकता है। शिक्षा मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा ही वह सीढ़ी है जिस पर व्यक्ति अपने आर्थिक, सामाजिक आदि स्तरों को उंचा बना सकता है। समाज की शक्ति का आधार ही शिक्षा है। कम्प्यूटर कर युग पूरे भारत में शुरू हो गया था जो धीरे-धीरे सभी वर्गों में अपना प्रभाव दिखाने लगा था जिसके चलते सभी वर्गों के लिए कम्प्यूटर की जानकारी शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य हो गई। एक राष्ट्र अथवा समाज के लिए सबसे महत्वपूर्ण साधन मानव है। कोई भी राष्ट्र उस समय ही उन्नति के पक्ष पर अग्रसर हो सकता है। जबकि उसके अंदर प्रत्येक मानव यह सुविधा प्राप्त हो कि स्वतंत्रतापूर्वक अपना उतना विकास कर सके जितना कि उसमें विकास करने की क्षमता है। वास्तव में मानव के विकास के इतिहास में शिक्षण एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

Keywords: High School Level, Family Environment, Educational Adjustment, हाईस्कूल स्तर, पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक समायोजन

1. प्रस्तावना

शिक्षा एक गतिशील क्रिया है और इसका प्रमुख उद्देश्य है - सदैव आगे बढ़ते रहना। अपनी गति से प्रेरित यह संपर्क में आने वाले लोगों को भी आगे बढ़ा देती है। इसे इस प्रकार भी स्पष्ट किया जा सकता है कि यह संपर्क में आने वालो को अपनी सक्रियता और गति से प्रेरित करके उसे आगे बढ़ने अर्थात् विकास के लिए तैयार करती है। इस प्रकार शिक्षा से प्रभावित प्रत्येक बालक का व्यक्तित्व उन बालकों से भिन्न होना चाहिए जो इसके संपर्क में नहीं आते। शिक्षा का सैद्धांतिक आधार दर्शन कर आधारित है और दर्शन का संबंध जीवन से है। जीवन यापन के ढंग को दर्शन कहते हैं। दर्शन का अवलंबन लिए बिना उद्देश्यो का निर्धारण असंभव होगा। शिक्षा व्यक्ति की इस प्रवृत्तियों का उचित मार्गदर्शन करके उसे परिपक्वता प्रदान करती है। शिक्षा ही मानव जीवन में उच्चता उत्कृष्टता और पवित्रता लाती है। शिक्षा न केवल मानव का

विकास करती है बल्कि उसे जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए योग्य बनाती है। मानव अपनी आवश्यकताओं की संतुष्अि किसी उपलब्ध साधन द्वारा नहीं हो जाती है तब तक समस्या उत्पन्न हो जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि ''आवश्यकता संतुष्टि के साधन या मार्ग में बाधा ही समस्या है।''

पारिवारिक वातावरण -

परिवार व्यक्ति से भी अधिक प्राचीन है। व्यक्ति का जन्म परिवार में होता है। उसका लालन-पालन भी परिवार में होता है वही उसका सामाजिकता का पाठ भी पढ़ाया जाता है। परिवार समाज की सबसे अहम प्राकृतिक इकाई है। यह मानव जाति की प्राकृतिक संख्या है।

'घर' या परिवार समाज की एक इकाई है। यह सबसे अधिक आधारभूत सामाजिक समूह है। इसमें साधारणतः पति-पत्नी और उनके बच्चे होते हैं।

शिक्षा के साधन के रूप् में परिवार का दोहरा दायित्व है। प्रथम व्यक्ति के प्रति तथा दूसरा समाज के प्रति उसका प्रमुख दातियत्व बच्चे का समाजीकरण करना है। साथ ही उसके विकास तथा संरक्षण के लिए कार्य करना है।

परिवार से हम संबंधों की वह व्यवस्था समझते हैं जो माता-पिता और उनकी संतानों के बीच में पाई जाती है।

इस प्रकार परिवार बालक पर अपना स्थायी प्रभाव अंकित कर देता है, वह वैसा ही बनता है। जैसा उसको घर उसको बनाता है।

शैक्षिक समायोजन क्षमता -

समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकता और इन आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है। शैक्षिक समायोजन अनवरत् चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित संबंध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। विद्यालय में ऐसे भी बालक होते हैं जिनकी व्यवहारिक समस्याएं होती है और इन्हें हम असाधारण या विशिष्ट बालकों की श्रेणी में रखते हैं।

शैक्षिक समायोजन क्षमता संसार में मनुष्य को सभी को एक समान समझता है जिसमें आप देखें होंगे कि मनुष्य एक समाजाकि प्राणी है। वह अंत समय तक समाज में ही रहना चाहता है। वह उसी समय अधिक प्रसन्न दिखाई देता है, ज बवह स्वयं की रूचि पसंद और अभिवृत्तियों वाले समूह को प्राप्त कर लेता है। व्यावहारिक गतिशीलता का ही नाम समायोजन है।

संबंधित शोध का अध्ययन -

खरे सुनीता ने (1996) में - ''उच्चतर माध्यमिक स्कूल के छात्रों का पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि'' विषय पर शोध कार्य किया।

निष्कर्ष - इस शोध उद्देश्य शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना

था। नयादर्श के लिए भोपाल शहर के माध्यमिक विद्यालयों से 212 छात्रों का चयन किया गया, जिसमें 106 लड़के और 106 लड़कियां थी। न्यादर्श एकत्रीकरण के लिए पारिवारिक वातावरण व शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणओं का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण मध्यमान मानक विचलन एवं टी परीक्षण के द्वारा किया गया। अत' यह पाया गया कि छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सह-संबंध था तथा यह भी प्रावरण का पारिवारिक वातावरण छात्रों की आयु, लिंग तथा शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है।

मिश्र रंजना (1993) ने - ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक विषयों पर अध्ययन किया'' यह अध्ययन 100 छात्र-छात्राओं पर किया गया।

निष्कर्ष - अध्ययन के परिणाम से ज्ञात हुआ कि कृषि, वाणिज्य, मानविकी विज्ञान एवं तकनीकी विज्ञान में छात्र एवं छात्राओं की रूचि समान थी, जबकि फाइन आर्ट्स तथा गृह विज्ञान में छात्र-छात्राओं की रूचि छात्रों की अधिक थी।

समस्या कथन -

''हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन''

अध्ययन का उद्देश्य -

1) हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2) हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों पर शैक्षिक समायोजन क्षमता के प्रभाव का अध्ययन करना।
3) हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक समायोजन क्षमता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना -

H_{01} हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

H_{02} हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शैक्षिक समायोजन क्षमता का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएं - प्रस्तुत शोध अध्ययन में रायपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय शालाओं के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श - कक्षा 9वीं के 600 विद्यार्थियों का चयनकिया जावेगा।

अध्ययन विधि - प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग करके न्यादर्श का चयन किया गया। जिसमें रायपुर जिले के हाई स्कूल विद्यालय में से 600 छात्र-छात्राओं का चयन करके सर्वेक्षण विधि से आंकड़ो का संकलन किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यार्श चयन प्रक्रिया - रायपुर जिले के शासकीय और अशासकीय ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में 600 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

सांख्यिकीय अभिप्रयोग -

परिकल्पना क्रमांक H_{01} हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा। इस परिकल्पना का Independent Sample '+' Test से विश्लेषित किया गया।

शहरी-ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण की तुलना -

चर	शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी (N 300)		ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी (N 300)		Mean Diff.	'+'
	Mean	S.E.	Mean	S.E.		
सामंजस्य	18.46	0.477	15.46	0.474	3.00	4.45
अभिव्यक्ति	18.06	0.439	16.64	0.477	1.42	2.36
संघर्ष	16.25	0.467	18.76	0.470	2.50	3.76
स्वातन्त्र	19.48	0.503	18.14	0.517	1.34	1.86
उपलब्धि अभिविन्यास	18.41	0.522	17.05	0.424	1.36	2.02
बौद्धिक सांस्कृतिक अभिविन्यास	19.48	0.516	16.27	0.458	3.21	4.65
सक्रिय मनोरंजक अभिविन्यास	16.24	0.430	14.15	0.381	2.09	3.64
नैतिक धार्मिक प्रमुखता	16.22	0.462	14.02	0.479	2.19	3.29
संगठन	16.58	0.432	17.08	0.417	0.50	0.84
नियंत्रण	16.96	0.402	16.10	0.474	0.86	1.38

'+' (df=598) at. 05 level 1.96 and 2.59 at 0.01 level.

1. **तालिका के अनुसार शहरी-**ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के समूह के पारिवारिक वातावरण के आयामों सामंजस्य, अभिव्यक्ति संघर्ष, उपलब्धि अभिविन्यास, बौद्धिक सांस्कृतिक अभिविन्यास, सक्रिय मनोरंजक अभिविन्यास तथा नैतिक धार्मिक प्रमुखता पर सार्थक भिन्नता पायी गयी परन्तु स्वातंत्र, संगठन तथा नियंत्रण आयामों पर दोनों समूहों के बीच भिन्नता नहीं थी। अतः परिकल्पना क्रमांक 01 हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र का विद्यार्थियों पर पारिवारिक वातावरण का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा। आंशिक रूप से अस्वीकार की जाती है।

2. **परिकल्पना क्रमांक H_{02}** हाईस्कूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर शैक्षिक समायोजन क्षमता पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, इस परिकल्पना को Independent Sample '+' Test से विश्लेषित किया गया।

शहरी-ग्रामीण क्षेत्र में स्थित हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन की तुलना -

चर	शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी (N 300)		ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी (N 300)		Mean Diff.	'+'
शैक्षिक समायोजन	Mean	S.E.	Mean	S.E.		
	6.44	0.215	5.60	0.231	0.84	2.65

'+' (df=598) at 0.05 level 1.96 and 2.59 at 0.01 level.

तालिका के अनुसार शहरी क्षेत्र (Mean=6.44) तथा ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों (Mean=5.60) की शैक्षिक समायोजन में सार्थक भिन्नता नहीं पायी गयी यद्यपि शहरी क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन, ग्रामीण क्षेत्र के हाईस्कूल के विद्यार्थियों से कम पाया गया जो कि '+' = 2.65, P<0.01 से भी सिद्ध होता है। परिणाम के अनुसार शहरी तथा ग्रामीण हाईस्कूल के विद्यार्थियों के शैक्षिक समयोजन में सार्थक भिन्नता पायी गयी, अतः परिकल्पना हाईसकूल स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों पर उनकी शैक्षिक समयोजन क्षमता का सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, अस्वीकार की जाती है।

2. निष्कर्ष

1) शहरी ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों के समूह में पारिवारिक वातावरण के आयामों सामंजस्य, अभिव्यक्ति, संघर्ष, उपलब्धि अभिविन्यास, बौद्धिक सांस्कुतिक अभिविन्यास, सक्रिय मनोरंजक अभिविन्यास तथा नैतिक धार्मिक प्रमुखता पर सार्थक सार्थक भिन्नता पायी गयी परन्तु स्वातन्त्र, संगठन तथा नियंत्रण आयामों पर दोनों समूहों के बीच भिन्नता नहीं थी।
2) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में संस्थिति हाईस्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करती है।
3) हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण उनके शैक्षिक समायोजन को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

सुझाव-

1) हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनके संज्ञानात्मक कौशल पर पड़ने वाले प्रभाव पर भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता हैं।
2) हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं सांस्कृतिक परिवेश का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव पर भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है।
3) हाईस्कूल के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी सृजनशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव पर भविष्य में शोध कार्य किया जा सकता है।

शैक्षणिक अनुप्रयोग - हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक समायोजन क्षमता पर शिक्षा में उपयोग कुछ निम्नलिखित हो सकता है-

1) **समर्थन और प्रोत्साहन -** एक सकारात्मक और सहायोगी पारिवारिक वातावरण छात्रों को मानसिक और भावनात्मक समर्थन प्रदान करते हैं जो उनकी शिक्षा में उनकी प्रेरणा और आत्मविश्वास को बढ़ाता है।
2) **शैक्षणिक संसाधनों की उपलब्धता -** यदि परिवार शैक्षिक संसाधनों (जैसे कि पुस्तकें, कम्प्यूटर, इंटरनेट) की उपलब्धता सुनिश्चित करता है तो इससे छात्रों को पढ़ाई में मदद मिलती है और उसकी सीखने की क्षमता बढ़ती है।
3) **शैक्षणिक अनुशासन -** नियमित दिनचर्या और अनुशासित वातावरण विद्यार्थियों को समय प्रबंधन और अध्ययन की आदतें विकसित करने में सहायता करता है।

इन बिन्दुओं को समझते हुए शिक्षकों और स्कूल प्रबंधनों को विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण को समझने और उसे सकारात्मक बनाने के प्रयास करने चाहिए जिससे उनकी शैक्षिक समायोजन क्षमता में सुधार हो सक।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Gupta S.P. (2007), Higher Educational Psychology, Sharda Pustak Bhawan of Allahabad.
Pathak, P.D. (2011), Educational Psychology, Agra, Agrawal Publication.
Educational Psychology, Agrawal Publication, Agra p. 530.
Singh, Dr. Arun Kumar, Educational Psychology, Motilal Banarasi Das, Varanasi.
Sarin and Sarin (2007), Educational Research Methods, Vinod Pustak Mandir, Agra-2.
Singh Dr. Ram Pal, Educational Research and Statistics, Vinod Pustak Mandir, Agra.
Tyagi G.S.D., (2005), Principles of Education, Vinod Pustak Mandir, Agra.